नवभारत

समर्पित शिक्षकों की परंपरा

मॉडर्न कॉलेज को समर्पित शिक्षकों की एक बेहतरीन परंपरा रही है. मैंने वर्ष 1977 में मॉडर्न कॉलेज में प्रवेश किया. मुझपर उस समय चिरपुटकर सर का काफी प्रभाव रहा. सर की अध्यापन पद्धति काफी आकर्षक थी. छात्रों में हमेशा वे सौरार्द का वातावरण रखते थे. उस वर्ष शिक्षा नीति में बदलाव हुआ था और पहली बार बारहवी के लिए बोर्ड शुरू हुआ. इस बदलाव के बाद पहली बार हम परीक्षा दे रहे थे. उस समय पहली बार स्टैटिक विभाग शुरू हुआ था. इस नये क्लास में बैठने की भी जगह उपलब्ध नहीं थी. कई बार हम स्टोर रुम में बैठा करते थे. उस समय के सभी शिक्षक पूरी तरह से तैयारी करते थे. इसमें प्रकाश दीक्षित सर का नाम विशेष तौर पर लेना होगा. सभी शिक्षकों में कमिटमेंट काफी दिखती थी. उस समय संस्था की इमारत ज्यादा बड़ी नहीं थी, लेकिन अब काफी बदलाव हुआ है.महाराष्ट्र का सक्षम निर्माण करने के लिए शैक्षिक तौर पर इस शिक्षा संस्थान का काफी अहम योगदान है. हमें सी. जी. कुलकर्णी सर स्टैटिक और मैथेमेटिक्स और गंभीर सर फिजिक्स पढ़ाया करते थे. कई बार शिक्षक हमें हंसी-मजाक के साथ पढ़ाते थे, जिससे हमें यहां शिक्षा अर्जित करते वक्त काफी आनंद मिलता था. मैं काफी शरारती स्टूडेंट था फिर भी समर्पित शिक्षकों ने मुझे काफी अच्छी तरह से समझाया. हर एक छात्र के सभी सवाल अच्छी तरह से हल हों, इस दिशा में शिक्षक प्रयास करते थे. आने वाले समय में शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन होना जरुरी है. छात्रों का सर्वांगीण विकास हों, इस दिशा में शिक्षकों द्वारा पढ़ाना आवश्यक है. आज हर क्षेत्र में तकनीक उन्नत होती जा रही है, जिससे शिक्षक भी तकनीकी तौर पर काफी मजबूत होने चाहिए और यही तकनीक छात्रों तक सरल भाषा में कैसे पहुंचे इस दिशा में शिक्षकों द्वारा प्रयास की जरुरत है. तेजी से बदलती हुई दुनिया में आज विभिन्न क्षेत्रों में अवसर उत्पन्न हो रहे है. उन अवसरों का लाभ छात्रों को दिलाते दिलाने का प्रयास होना जरुरी है. मैं आशा करता हूं की शिक्षा क्षेत्र की सभी चुनौतियों से पार पाते हुए मॉडर्न कॉलेज अपनी स्वर्ण महोत्सवी यात्रा भी जारी रखेगा और इस कॉलेज छात्रों को शिक्षा के साथ-साथ विभिन्न अवसर प्राप्त होंगे.

– सी. ई. पोतनीस, पूर्व छात्र बीएस्सी स्टैटिक, मॉडर्न कॉलेज, पुणे

Pune Edition
19-january-2021 Page No. 8
epaper.enavabharat.com